थराली तहसील में भूमि उपयोग और प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन एक भौगोलिक अध्ययन

केदार सिंह[1] प्रो0 एम0एस0एस0रावत[2]
शोध छात्र[1] प्रोफेसर[2]
भूगोल विभाग
हे0न0ब0ग0वि0वि श्रीनगर गढ़वाल, (उत्तराखण्ड)

सारांश –

भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन का एक मुख्य पहलू है। क्षेत्रीय विकास में भूमि उपयोग महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में माना जाता है। भूमि उपयोग प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक उपादानों के संयोग का प्रतिफल है। मानव अपने अविरल परिश्रम से भूमि उपयोगिता में वृद्धि करता है भूमि उपयोग केवल प्राकृतिक भू–दृश्य या वनस्पति आच्छादित भू–दृश्य के संदर्भ में ही नहीं बल्कि मानवीय क्रियाओं के उत्पन्न उपयोगी सुधारों के रूप मे भी प्रयुक्त होना चाहिए। सामान्यतः भूमि उपयोग के अंतर्गत वन भूमि, चारागाह, कृषि भूमि, वागवानी, कृषि योग्य भूमि कृषि के अतिरिक्त सभी प्रकार का भूमि उपयोग न्याय पंचायत के प्रति वेदित क्षेत्रफल के अनुसार जबकि वन भूमि के अंतर्गत क्षेत्र संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल के अनुसार प्रदर्शित किया जाता है। उच्चावच के आधार पर 2000 मी0 से अधिक ऊँचाई वाले गांवों से शीतकाल की अवधि के समय खेतों में बर्फबारी होती रहती है और जिस कारण फसल दब जाती है। जिस कारण शीतकाल जलवायु में बर्फ से प्रभावित होकर मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है। थराली तहसील के संपूर्ण क्षेत्रफल में उच्चावच की विषमता के आधार पर अध्ययन क्षेत्र को तीन भागों जैसे (ऊपरी धाटी, मध्य क्षेत्र व निम्न क्षेत्र में मिट्टीयों का आकार–प्रकार एवं रासायनिक संगठन में बहुत अंतर पाया जाता है। ऊपरी तहसील क्षेत्र में हिमावरण व हिमोड़ विक्षेपों के कारण मृदा निर्माण कि क्रिया असंगठित मिट्टी कृषि उत्पादन के लिए उपयुक्त नहीं है। मध्यवर्ती क्षेत्रों में पाई जाने वाली मिट्टी ढाल की प्रवणता सीढीनुमा खेती निर्माण तथा धरातलीय बनावट के आधार पर प्रभावित हुई है। ऊँचाई बढने के साथ–साथ मिट्टी के कणों के आकार बड़ी गहराई में कमी आ जाती है। मिट्टी महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन वह प्रक्रिया है जिसके तहत भौगोलिक वातावरण में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों जैसे कि भूमि, जल, मृदा, पेड़ पौधों तथा जन्तुओं का वैज्ञानिक तरीके से प्रबन्धन किया जाता है।

इस प्रक्रिया में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि प्राकृतिक संसाधनों का नियमित प्रबन्धन किस प्रकार से जीवन की गुणवत्ता को वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ी को प्रभावित करता है।

प्राकृतिक संसाधन प्रबन्ध साथ ही समुचित विकास का समरूप है। जिसके तहत वैज्ञानिक सिद्धान्तों के द्वारा समुचित वैश्विक भूमि प्रबन्धन तथा पर्यावरणीय नियन्त्रण को परिरक्षित कर वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारियों के साथ परिस्थितिकी तथा जीवनदायी संसाधनों की परख की जाती है। अतः हम कह सकते हैं कि, प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन प्राकृतिक संसाधनों के समुचित प्रबन्धन पर बल देता है।

Keywords: Landuse, Landcover, Change land use Resource

अध्ययन क्षेत्र –

थराली तहसील 29^0 59′′ 44′ 30^0 15′′ 2′ उत्तरी अंक्षाश, 79^0 17′′ 39′ 79^0 49′′ 41′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। तहसील की पूर्व से पश्चिम लम्बाई 50 किमी0 तथा उत्तर से दक्षिण की चौड़ाई 27 किमी0 है। यह तहसील उच्च हिमालय का एक भाग है। भू–भाग अत्यन्त कटा–फटा होने के कारण कुछ प्रतिशत भाग पर कृषि होती है। तहसील का कुल क्षेत्रफल 992 किमी0^2 है। थराली तहसील प्रशासनिक रूप से तीन विकासखण्डों थराली, देवाल, नारायणबगड में संगठित किया गया है।

Location Map of Tharali Tahsil

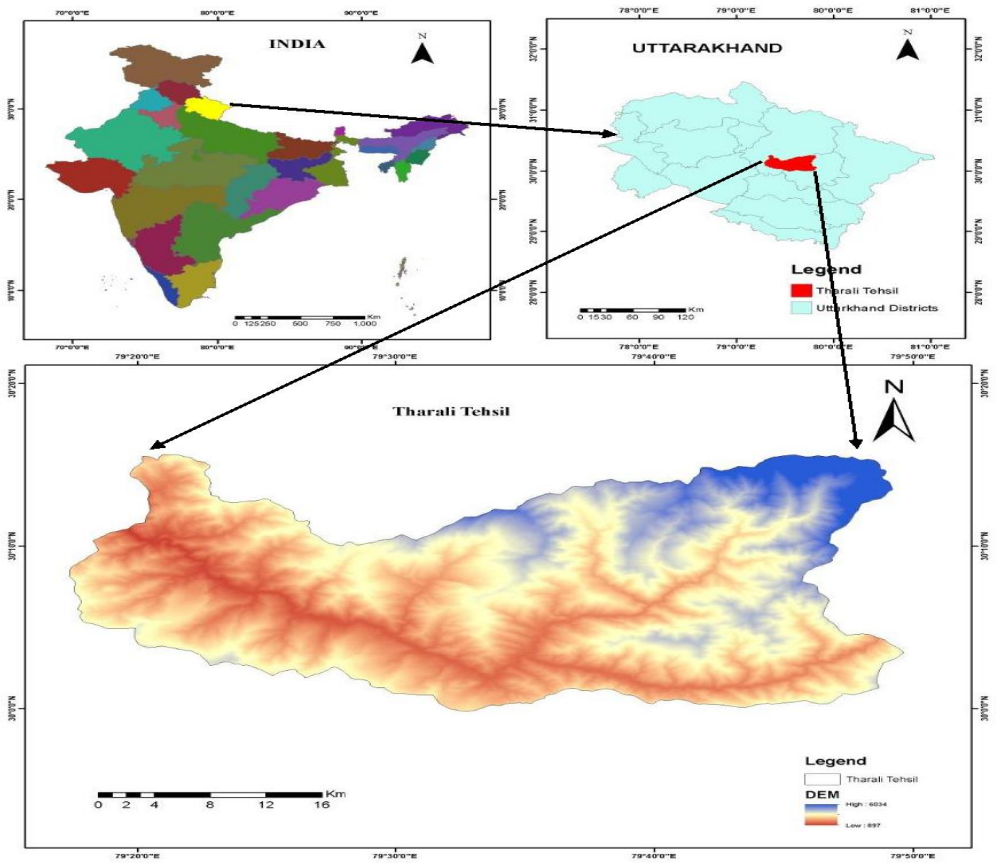

Figure 1 Location Map

विधि तन्त्र –

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत में साक्षात्कार, प्रशनावली क्षेत्र भ्रमण से आकड़े एकत्रित किये गये है। द्वितीयक स्रोतों में तहसील कार्यालय से प्राप्त किया गया है। तथा विश्लेषण हेतु अध्ययन की इकाई विकास खण्ड एवं न्याय पंचायत बनाये गये है।

उद्देश्य –

1.थराली तहसील में भूमि उपयोग का मल्यॉकन एवं भूमि संरक्षण।

विकासखण्ड़ वार भूमि उपयोग (हेक्टीयर में)2017–18

Table 1 विकासखण्ड़ वार भूमि उपयोग (हेक्टीयर में)2017–18

विकासखण्ड़	कुल प्रविवेदित क्षेत्र	वन	कृषि योग्य वंजर भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	कृषि अयोग्य	अन्य
नारायणबगड	19420	3776	124.16	8.17	71.16	720	4626.15
थराली	16354	5091	74.09	7.98	62.34	1486	610.02
देवाल	26149	8494	263.33	28.60	71.16	2247	974
योग	61923	17361	461.58	44.75	204.66	4453	6210.17

विकासखण्ड़ वार भूमि उपयोग प्रतिशत में

Table 2 विकासखण्ड़ वार भूमि उपयोग प्रतिशत में

क्र0 सं0	विकासखण्ड	कुल प्रविवेदित क्षेत्र	वन	कृषि योग्य वंजर भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	कृषि अयोग्य	अन्य
1.	नारायणबगड	31.36	21.74	26.89	18.25	34.76	16.16	74.49
2.	थराली	26.41	29.32	16.05	17.83	30.46	33.37	9.83
3.	देवाल	42.22	48.92	57.04	63.91	34.76	50.46	15.68

Figure 2 विकासखण्ड़ वार भूमि उपयोग प्रतिशत में

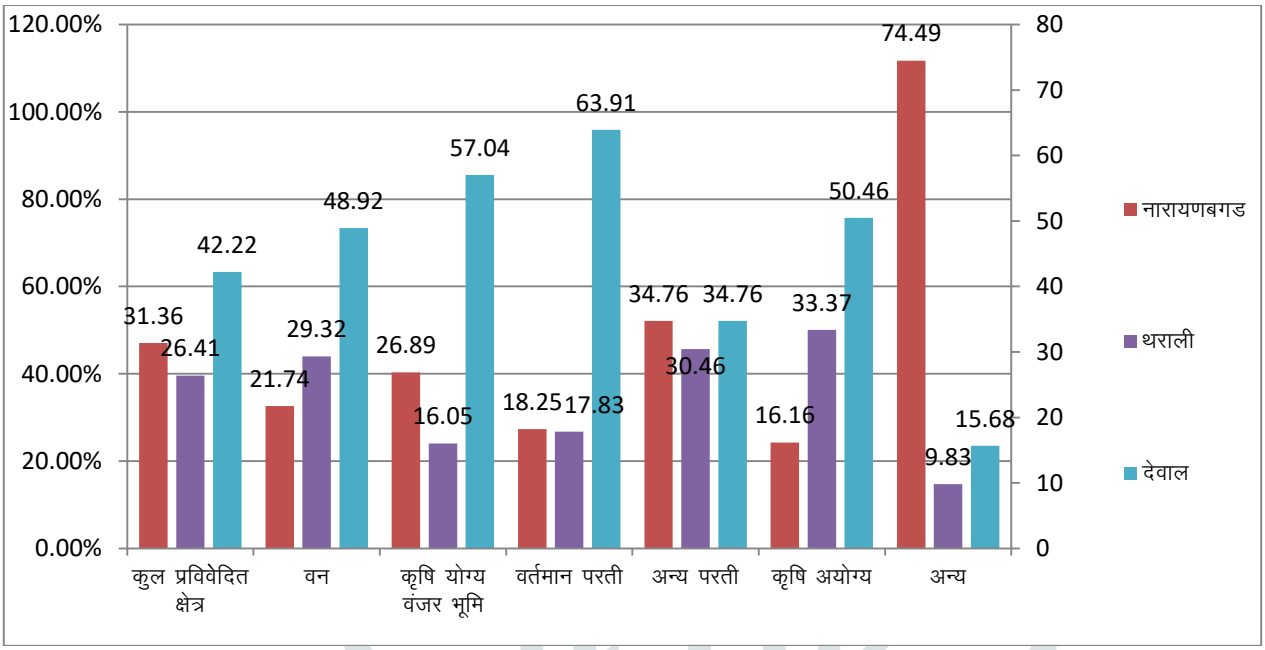

Table 3 विकासखण्ड़ वार भूमि उपयोग (हेक्टीयर में)2017–18

क्र0 सं0	न्याय पंचायत का नाम	वन का क्षेत्रफल	पानी से अच्छादित व प्रभावित क्षेत्रफल	कृषि के अतिरिक्त उपयोग में लायी गयी भूमि का क्षेत्रफल	क्षेत्र जिसमें कृषि अनिश्चित हो	सिंचित क्षेत्रफल (है0 में)	असिंचित क्षेत्रफल (है0 में)
1.	देवाल	633.32	74.38	517.95	60.47	0.20	736.79
2	लिंगडी	859.50	135.98	732.70	146.87	0.44	579.63
3.	हरमनी	1256.41	83.99	366.10	466.38	09.75	1075.79
4.	लोल्टी	756.32	86.94	901.45	357.25	28.97	1050.07
5.	मुन्दोली	1865.14	32.18	988.59	78.89	00	866.27
6.	जाखपाटियूं	216.93	89.59	675.16	00	43.65	5059.97
7.	थराली	1419.72	179.69	1755.51	317.79	22.84	1542.60
8	नारायणबगड	273.37	69.42	798.09	187.18	20.43	649.20
9.	भगोती	349.51	26.11	823.65	11.69	0.64	649.03
	योग	7630.22	778.28	7559.20	1626.52	126.92	7655.35

स्त्रोत – तहसील कार्यलय थराली

निष्कर्ष एवं सुझाव–

थराली तहसील में भूमि उपयोग सबसे अधिक देवाल विकासखण्ड में है। तथा सबसे कम भूमि उपयोग नारायणबगड विकास खण्ड में है। देवाल विकासखण्ड में कुल प्रतिवेदित भूमि 26149 है0 है, जो कि 42 प्रतिशत है। सबसे कम भूमि उपयोग थराली विकास खण्ड में कुल प्रतिवेदित भूमि का 26 प्रतिशत है वन भूमि सबसे अधिक देवाल 48 प्रतिशत भाग वन है। सबसे कम 21 प्रतिशत वन नारायणबगड में है। थराली तहसील में कुल प्रतिवेदित भूमि 61923 है0 है। बंजर भूमि सबसे अधिक 57.04 प्रतिशत देवाल विकास खण्ड में है।

थराली तहसील में भूमि उपयोग में 9 न्याय पंचायत है। देवाल में वन क्षेत्रफल 633.32 है0 है। पानी से आच्छादित 74.34 हे0। कृषि भूमि 517.95 है0। संचित क्षेत्रफल 0.20 है0 है। असिंचित 736.79 हे0 है। तहसील में सबसे अधिक वन क्षेत्र मुन्दोली 1868 न्याय पंचायत में है। सबसे कम जाखपाटियू में 216.93 हे0 है। पानी से आच्छादित प्रभावित क्षेत्रफल सबसे अधिक थराली न्याय पंचायत में 179 हे0 है। सबसे कम मुन्दोली न्याय पंचायत में 32.18 हे0 है। कृषि उपयोग में थराली न्याय पंचायत में 1755.51 हे0 सबसे अधिक क्षेत्रफल है। सबसे कम 366.10 हे0 भूमि न्याय पंचायत हरमनी में है। बंजर भूमि सबसे कम 11.69 है0 मगोती न्याय पंचायत में है। संचित क्षेत्रफल में सबसे कम 0.20 हे0 न्याय पंचायत मुन्दोली में है। और सबसे अधिक न्याय पंचायत जाखपाटियू में 4365 हे0 है। असंचित क्षेत्रफल में सबसे अधिक क्षेत्रफल जाखपाटियू में 5059.97 है0 है सबसे कम लिगड़ी न्याय पंचायत में 579 है0 है। कृषि में अनिश्चित में जाखपाटियू में 0.0 है0 है इसका मुख्य कारण चट्टानी भाग अधिक होने कके कारण यहां कृषि कम की जाती है।

संचित क्षेत्रफल में मुन्दोली न्याय पंचायत में 0.0 हे0 भूमि में सिंचाई नहीं की जाती सम्पूर्ण न्याय पंचायत में वर्षा पर निर्भर रहती है। मुन्दोली न्याय पंचायत में अधिकांश भाग पर्वतीय है जिस कारण यहॉ पर कृषि भूमि में सिंचाई नहीं की जाती है। पूर्णतः वर्षा पर निर्भर रहते हैं।

थराली तहसील में भूमि उपयोग व संसाधन प्रबन्धन तहसील में भूमि उपयोग का सबसे अधिक थराली न्याय पंचायत में है। भूमि का अधिकांश भाग घाटी में स्थित है। इस कारण यहॉ पर भूमि उपयोग अधिक है। तहसील के सबसे कम भूमि उपयोग नारायणबगड न्याय पंचायत में है। इसका मुख्य कारण अधिकांश भाग चट्टानी है। जिस कारण कृषि कम भाग पर की जाती है।

भूमि एक संसाधन है। सम्पूर्ण भाग पर्वतीय होने के कारण यहॉ भूमि का प्रबन्धन मेंढ बनाकर व सीडीनुमा खेती से भूमि का संरक्षण किया जाता है। और भूमि उपयोग में सार पद्धति से कृषि में उत्पादकता को बढ़ावा मिलता है। भूमि एवं प्राकृतिक संसाधन है। जिस पर मानव निवास करता है। तथा

भूमि पर निर्भर रहता है। भूमि संरक्षण के लिये थराली तहसील में वनोरोपण, चकबन्दी, मैंढ बनाना। चेक डेम, व गाड़ गेधेरों में दीवार बनाकर भूमि संरक्षण किया जाता है।

References:-

1. Agarwal, B., 1992, the Gender and Environment Debate: Lesson from India Faminist Studies, vol. 18, pp. 118-158.

2.Singh, D.V., 1993 A study of impact of Agricultural Support land on Hill Economy of Himachal Pradesh' Indian Journal of Agriculturla Economics, Vol 48, no pp 551-556

3. Singh Karam singh N.and Singh R.P., 1996 Utilisation and Development of common property Resources A field study of Punjab Indian Journal of Agricultural Economics Vol 51 pp 249-259.

4. Sati, V. P.(2013). Tourism Practices and Approaches for its Development in Uttarakhand, Himalaya, India. Journal of Tourism Challenges and Trends, Innovation in Tourism, Volume iv (1). ABHAY SHANKAR PRASAD, BINDHY WASINI PANDEY 68 10. Sati, V. P. (2014).

5. Bian Yaowu (1998), Interpretation on Land Administration Law of People's Republic of China [in Chinese]. [This present a comprehensive interpretation of the new land administration law of P.R.China.

6. Das, B (2016). Temporal Changes in Land Use and Land Cover in Dooars Region: A Study of Alipurduar District, West Bengal, India. Environment, Ecology and Humans: Challenges and Contestations (Edited by Basu Roy, Bhoumik, lama, Roy)

7. Chauhan, S. Parmeshwar (2003),"Change Detection in Sal Forest in Dehradun Forest Division using Remote Sensing and Geographical Information System",Journal of the Indian Society of Remote Sensing.